बिहार में बाढ़ की समस्या

साल दर साल आनेवाली बाढ़ बिहार, खासकर उत्तर बिहार के समतल इलाकों और वहाँ के वाशिंदों की आर्थिक बदहाली का मुख्य कारण है। मध्य बिहार के कुछ जिलों पर बाढ़ मेहरबाँ होती रहती है। राष्ट्रीय बाढ़ आयोग की रिपोर्ट के अनुसार देश में बाढ़ से होने वाली कुल क्षति का 22.8% बिहार में होता है, जबकि बाढ़ से प्रभावित होने वाले कुल क्षेत्र का महज 16.5% ही बिहार में पड़ता है। यानि अपेक्षाकृत कम क्षेत्र पर अधिक नुकसान बिहार की त्रासदी है।

जल संसाधन विभाग के प्रतिवेदन के अनुसार बिहार के कुल क्षेत्रफल 173.50 लाख हेक्टेयर में से 64.61 लाख हेक्टेयर यानि बिहार की कुल भूमि का 37% बाढ़ की चपेट में आता है। राष्ट्रीय बाढ़ आयोग के अनुसार उत्तर बिहार का 76% भाग बाढ़ प्रभावित है। उत्तर बिहार के समतल क्षेत्र वाले जिले जहाँ आबादी का घनत्व ज्यादा है, बाढ़ से सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। ये जिले हैं – सारण, सीवान, गोपालगंज, पश्चिम चम्पारण, पूर्वी चम्पारण, बेतिया, सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, दरभंगा, बेगुसराय मधुबनी, कटिहार, पूर्णियाँ, किशनगंज, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, नौगछिया आदि। मध्य बिहार

Scanned with CamScanner

की स्थिति कुछ बदली हुई है। इसके पटना, भोजपुर और भभुआ आदि जिले भी बाढ़ की चपेट में आते रहते हैं, जबकि इसके गया, जहानाबाद, नवादा और औरंगाबाद तथा दक्षिणी बिहार के विभिन्न जिलों पर तथा दक्षिणी बिहार के विभिन्न जिलों पर सूखे का कहर टूटता है।

राज्य में बाढ़ का कहर बरपाने वाली मुख्य नदियाँ हैं— गंगा, घाघरा, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला, कोसी, महानन्दा, अधवारा समूह की नदियाँ, सोन, पुनपुन, किऊल, बराकर आदि। कोशी के नाम से तो आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसे कभी बिहार का शोक कहा गया था।

वर्ष 1954 से वर्ष 1993 तक 614 करोड़ रुपये से भी अधिक खर्च करने के बावजूद बाढ़ की आशंका वाला क्षेत्र घटा नहीं बल्कि 25 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 65 लाख हेक्टेयर हो गया।

बिहार की नदियाँ निरन्तर उथली होती जा रही है। सिल्ट जमा हो जाने के कारण हम तमाम कोशिशों के बावजूद तटबंधों को घेर नहीं सकते इसलिए यह सरकार का दायित्व बनता है कि वह तटबंधों के अलावा नदियों के स्त्रोतों पर जलाशय बनाने तथा जल ग्रहण क्षेत्रों में वनीकरण जैसे उपायों पर भी अमल करे।

बाढ़ प्रबंधन के उपाय

बिहार की बाढ़ का गहरा रिश्ता नेपाल

से जुड़ा है क्योंकि बूढ़ी गंडक को छोड़कर इस क्षेत्र में बहने वाली प्रायः सभी नदियों का उद्गम स्थल नेपाल (हिमालय पर्वत) ही है। अगर हम नेपाल के साथ बाढ़ नियंत्रण का एक कारगर अंतर्राष्ट्रीय प्रकल्प तैयार करें तो बागमती, कोसी, कमला और अधवारा समूह की नदियों की विनाश-लीला से उत्तर बिहार के एक बड़े हिस्से का स्थायी बचाव किया जा सकता है।

बाढ़ नियंत्रण के लिए नदियों की उड़ाही (डिसिल्टिंग) को अत्यन्त जरूरी माना जा रहा है। इससे नदियाँ गहरी होंगी वहीं उसकी मिट्टी से उसके किनारे ऊँचे तटबंध भी बन सकते हैं। तकनीकी जानकारों का कहना है कि अगर सिर्फ गंगा नदी की ड्रेजिंग कर दी जाय तो बिहार में बाढ़ पर एक हद तक काबू पाया जा सकता है क्योंकि बिहार में बहने वाली दो-चार नदियों को छोड़कर अधिकांश गंगा में ही मिलती हैं। गंगा जितनी गहरी होगी उसकी जलग्रहण ~~क्षमता~~ की क्षमता उतनी ही अधिक बढ़ जाएगी।

नदियों के विसर्पों की तथा मोड़ों के कारण जल-बहाव में रुकावट पैदा होती है और ये बाढ़ का कारण बनती हैं। अतः नदियों के मार्ग से विसर्पी मोड़ों को हटाकर सीधा करके जल का तेजी से विसर्जित करने का उपाय किया जाए तो बाढ़ आने की संभावना कम की जा सकती है।

बाढ़ आने से पूर्व सूचना देकर भी बाढ़ से कुछ हद तक बचाव किया जा सकता है। बाढ़ से बचाव के लिए उसका पूर्वानुमान करना

Scanned with CamScanner

आवश्यक है। विश्व के ~~अनेक~~ अनेक बाढ़ प्रभावित देशों में पूर्वानुमान प्रणाली को अपनाया गया है।

बाढ़ के दुष्प्रभाव :—

(i) जल प्रदूषित होना→ बाढ़ आने के कारण सभी नदी नालों में बाढ़ का गंदा पानी जम जाता है, जिसमें मल-मूत्र सड़े गले जीवों के अवशेष जम जाते हैं और आस पास के सभी जगहों का पानी पीने लायक नहीं रह जाता है।

(ii) वनस्पतियों का विनाश → बाढ़ आने से बड़े-बड़े वृक्ष गिरकर बह जाते हैं। छोटी-छोटी वनस्पतियाँ पेड़-पौधे डूब जाते हैं। खेतों की फसलें नष्ट हो जाती हैं। ~~जिससे~~

(iii) भोजन की समस्या → बाढ़ के कारण सभी वनस्पतियाँ, खेत, आदि नष्ट हो जाने से ~~~~ भुखमरी की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

(iv) जीव-जन्तुओं पर प्रभाव → बाढ़ में ~~वृक्ष~~ वृक्षों के बह जाने से पक्षियों के घोंसले नष्ट हो जाते हैं। पालतू मवेशी पानी में ही मर जाते हैं। जिससे कृषकों को काफी नुकसान सहना पड़ता है।

(v) ~~मानव~~ वातावरण प्रदूषण → साँप, बिच्छू, छोटे-छोटे जीव-जन्तु मवेशी आदि के मर जाने पर उनसे बदबू फैलती है जिससे महामारी का प्रकोप हो जाता है।

(vi) मानव जीवन पर दुष्प्रभाव → बाढ़ के कारण मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। उसके सामने कई

Scanned with CamScanner

समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं जैसे - भुखमरी, आवास की समस्या, महामारी आदि।

Scanned with CamScanner